शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648
वर्ष - 03 अंक– 12 अक्टूबर - दिसंबर - 2025 Impact factor– 03

विनोद कुमार शुक्ल की उपन्यास कला

अंजना प्रसाद .एस
शोधार्थी,हिंदीविभाग
केरल विश्वविद्यालय
तिरुवनंतपुरम,केरल

डॉ.आर.जयचंद्रन
वरिष्ठ आचार्य
हिंदी विभाग,केरल विश्वविद्यालय
तिरुवनंतपुरम,केरल

शोध सार- ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यासों में आम आदमी के जीवन का अंकन हुआ है। प्रस्तुत आलेख में विनोद कुमार शुक्ल की उपन्यास कला का विवेचन किया है। विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यासों में आम आदमी के रोज़मर्रा के जीवनानुभव, उसकी परेशानियाँ, संघर्ष आदि का चित्रण है। आपके बच्चों के लिए लिखे गये उपन्यासों में बच्चों के रंग – भरी दुनिया का चित्रण बखूबी से किया है। शुक्ल जी जो बात कहना चाहते हैं उनको शब्दों से गढ़ते नहीं बल्कि शब्दों से खेलने की कोशिश करते हैं। यह उनकी भाषाई कौशल है।

बीज शब्द : निम्म मध्यवर्गीय जीवन, नौकरशाही, आर्थिक अभाव, प्रकृति, बचपन।

विनोद कुमार शुक्ल कवि के साथ–साथ सशक्त उपन्यासकार भी हैं। वे अपने साहित्य में आम आदमी को ही प्रमुखता देती है। लेखक के जीवन की अनुभूत सच्चाई का वर्णन अपने पात्रों के ज़रिए उजागर करना उनका उद्देश्य रहा है। एक साधारण परिवार में पले विनोद जी ने आम आदमी के सहज एवं सादगी पूर्ण ज़िंदगी का आंतरिक एवं बाह्य पक्षों को खोलने का प्रयास किया है। विनोद जी के उपन्यास क्रमशः-'नौकर की कमीज़' (1979), 'खिलेगा तो देखेंगे '(1996), "दीवार में एक खिड़की रहती थी' (1997),'हरी घास की छप्पर वाली झोंपड़ी और बौना पहाड़ ',' यासि रासा त '(2017),' एक चुप्पी जगह '(2018)।

विनोद कुमार शुक्ल का पहला उपन्यास 'नौकर की कमीज़' एक निम्नमध्यवर्गीय परिवार में पले संतू बाबू पर केंद्रित है। वह सरकारी दफ्तर में काम करता है। प्रस्तुत उपन्यास में संतू बाबू की अभावग्रस्त ज़िंदगी का खुला चित्रण दृष्टव्य है। संतू बाबू सरकारी कर्मचारी होने के नाते वह अपनी घर की पारिवारिक ज़िम्मेदारियों को निभाना बहुत प्रयत्न करती रहती है। संतू बाबू कहते है कि "मेरा वेतन एक कटघरा था,जिसे तोड़ना मेरे बस में नहीं था। यह कटघरा मुझमें कमीज़ की तरह फिट था।" (1) संतू बाबू एवं परिवार एक किराये मकान में ही रहते हैं। उनकी तनख्वाह इतनी कम है कि अपनी आजीविका जैसे - तैसे चलाती है। संतू बाबू को सब्जी खाना बहुत पसंद है लेकिन आर्थिक विषमता के कारण सब्जी, घी जैसे साधन घर में खरीदना बहुत कम था। संतू बाबू जिस किराये मकान में बसे है उनकी स्थिति भी बहुत दयनीय है। वर्षा है तो उनके घर के छत टपकने की परेशानी होती है। वे मकान मालिक से इसके बारे में कहते हैं लेकिन कोई फायदा नहीं है।

संतू बाबू एक साधारण आदमी है। दफ्तर एवं अपने परिवार के इर्द-गिर्द घूमकर जीनेवाले है। सरकारी दफ्तर में ही संतू बाबू शोषण का शिकार बनता है। साहब के द्वारा सिलवाया गया कमीज़ जिसको फिट हो जायेगा उसको साहब का नौकर बनना पड़ेगा। एक दिन चालाकी से संतू बाबू को यह कमीज़ पहनाया गया। यह कमीज़ उनके लिए फिट थी। उस समय से संतू बाबू को दफ्तर के काम के साथ साहब के घर का काम भी करना पड़ा। यह उनकी नियति है। इस तरह संतू बाबू को नौकर की उस कमीज़ जबरदस्ती से पहनाया गया था।

संतू बाबू एवं अपने दफ्तर के मित्रों देवांगन बाबू,गौराहा बाबू कभी भी इस शोषण से मुक्त नहीं है। इस भ्रष्ट नौकरशाही व्यवस्था के विरुद्ध वे आवाज़ उठाना चाहते हैं। जिस कमीज़ दफ्तर के साहब अपने नौकर केलिए सिलाई जाती है उसे वे मिलकर जला दिया जाता है। वह अपना विद्रोह इसी तरह प्रकट करता है कि " बड़े बाबू ने गौराहा बाबू से माचिस ली और उन्होंने एक ही बार में ही कमीज़ के टुकड़ों की ढेरी में आग लगा दी। हवा तेज़ चल रही थी इसलिए ढ़ेरी से अलग होकर एक दो टुकड़े बाहर निकल आए थे। मैं ने उन्हें फिर आग में डाल दिया।" (2)

विनोद जी का दूसरा उपन्यास है ' खिलेगा तो देखेंगे '। इसमें आदिवासी जीवन एवं गाँव में रहने वाले पिछड़े वर्ग के लोगों की कथा प्रस्तुत किया गया है। गुरुजी एवं उनके परिवार कथा के केंद्र में है। वहाँ गाँव की प्राथमिक पाठशाला में गुरुजी पढ़ाते हैं। उनका वेतन भी कम था। वे अपनी गृहस्थी भी पाठशाला के बरामदे में ही संभालते हैं। उस गाँव की स्थिति के बारे में लेखक कहते है कि "गाँव में केवल दो पक्के मकान थे एक ग्राम सेवक का क्वार्टर और दूसरा पुलिस थाना। झोंपड़ियों की तुलना में दोनों भव्य लगते।"(3) गाँव के पिछड़ेपन के कारण उन्हें बसने के लिए भी जगह नहीं है। एक दिन आँधी आये तो पाठशाला के छत उड़ जाता है और आकाश दिखाई पड़ता है। उस समय गुरुजी एवं उनका परिवार बेघर हो जाता है। आँधी में अन्य झोंपड़ियों भी बसने योग्य नहीं है। अंत में गुरुजी एवं उनके परिवार बसने के लिए पुलिस थाना को चुना है। यह सोचकर गुरुजी को बहुत अजीब–सा लगता है।

गुरूजी का बेटा मुन्ना भूख की समस्या से पीड़ित है। मुन्ना को जब अधिक भूख महसूस हो जाता है तब वह भूख की वजह से बेहोश हो जाता है। गुरुजी एवं उनका परिवार मुन्ना की इस हालत से परेशान है। गुरुजी के मन में यह विचार है कि भविष्य में मुन्ना की इस कमज़ोरी को पहचानकर लोग उससे फायदा उठाने की संभावना है। इसलिए गुरुजी मुन्ना को भूख सहना कैसा है यह सिखाना चाहता है। गुरजी की राय में अपने बच्चों को भूख सहने की कला सिखाने का कर्तव्य माँ–बाप पर निर्भर है। " माँ-बापे बेटे को भूख सहना सिखाना भी एक बड़ा कर्तव्य था। यह बात गुरुजी कहते तो गुरुजी के मुँह से कर्तव्य की जगह करतब निकलता। कर्तव्य का करतब।" (4)बड़ी मुश्किल से परिवार मुन्ना को भूख सहने की प्रशिक्षण भी देते हैं। लेकिन इसमें वे सफल नहीं हुई है।

दीवार में एक खिड़की रहती थी ' उपन्यास में विनोद कुमार शुक्ल एक निम्नमध्य वर्गीय परिवार की जीवन गाथा का सूक्ष्म अंकन किया गया है।प्रस्तुत उपन्यास परिवार में पति - पत्नी के बीच दांपत्य जीवन में कितना प्रेम और गरमाहट है यह दिखाने का उत्तम मिसाल है। इसे घरेलू प्रेमाख्यान कहा जाता है। कथा के केंद्र में नवविवाहित पति-पत्नी रघुवर प्रसाद एवं सोनसी है। वहाँ के एक निजी महाविद्यालय में रघुवर प्रसाद गणित का अध्यापक है। वे एक किराये मकान में ही रहते हैं। महाविद्यालय उनके मकान से आठ किलोमीटर दूरी पर था। रघुवर प्रसाद के माता, पिता एवं छोटे भाई उनके यहाँ से दूर गाँव में रहते हैं। यहाँ लेखक इन दंपतियों के रोज़मर्रा ज़िंदगी में घटित छोटी- छोटी घटनाओं को अंकित किया गया है। रघुवर प्रसाद एवं सोनसी के जीवन में एक अलग दुनिया है जहाँ वे अपने दांपत्य जीवन के पूरा रस का अनुभव करते हैं उनके कमरे के खिड़की से कूदकर वे एक जादुई दुनिया

में प्रवेश करते हैं वहाँ सब कुछ प्राकृतिक है। यह जादुई दुनिया अन्य लोगों के लिए दृश्यमान नहीं है। उपन्यास में जो खिड़की है वह मन का प्रतीक है। उस खिड़की के पीछे जल, वन , वृक्ष , पहाड़ी , तालाब, चट्टान, पेड़- पौधे, पशु – पक्षी , चन्द्रमा, पगडण्डियाँ आदि उपस्थित हैं। वहाँ एक बूढ़ी अम्मा एवं उनकी चाय की दूकान थी । वह अम्मा रघुवर प्रसाद एवं सोनसी को अपने पुत्र – पुत्री के तरह ही प्यार करते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में मुख्य कथा रघुवर प्रसाद एवं सोनसी की है लेकिन इसके साथ - साथ एक साधू और उसका हाथी भी है , बीड़ी पिने लड़का और उसका बाप, आस – पड़ोस वाले हैं, बच्चे हैं , विभागाध्यक्ष एवं उनका परिवार है , महाविद्यालय के प्राचार्य , प्रकृति सब अपने – अपने अलग तरीके से दृश्यमान हैं।

'हरी घास की छप्पर वाली झोंपड़ी और बौना पहाड़ ' उपन्यास बच्चों के लिए लिखा गया है। इसमें बच्चों की मित्रता , स्वप्नीली दुनिया आदि के साथ-साथ प्रकृति का भी सादगीपूर्ण वर्णन मिलता हैं। इस उपन्यास के सारे पात्र बच्चे ही है। विनोद कुमार शुक्ल अपने शब्दों में कहते है कि " हमारी और बच्चों की भागती-दौड़ती ज़िंदगी में मीड़िया की मायावी संस्कृति, सबको बाज़ार या ग्लोबल मंडी में जकड़ लेना चाहती है । इंटरनेट, चिटचैट के साथ उत्तेजनमूलक समाचारों के बीच परंपरा और संस्कृति में मिली दादी - नानी की कहानियों से बच्चे दूर होते जा रहे हैं। ऐसी जटिल समय में भी प्रकृति और परंपरा से संपृक्त ' हरी घास की छप्पर वाली झोंपड़ी और बौना पहाड़ ' उपन्यास की यह नई संरचना अनूठी है " ।(5)

प्रस्तुत उपन्यास में बोलू ऐसा पात्र है जो चिड़ियों की तरह उड़ना चाहता है । बोलू के बारे में ऐसा कहता है कि वह केवल चलते हुए बोलता है और चुप रहता है तब खड़ा रहता है या बैठ रहता है। पतरंगी चिड़िया भी ऐसा है। इसी तरह भैरा नामक लड़का है जो दूसरों के बात को कभी अनसुना करते हैं । इसलिए लोग उसे बहरा समझा जाता है। भैरा को इशारों से बातें करना अच्छा लगता है। अगला पात्र है छोटू । वह दूसरों की आवाज़ की नकल करता है। यह भी मज़े की बात है। इस तरह दूसरों के आवाज़ की नकल करने से छोटू को अपनी निजी आवाज़ नहीं पहचानती है। इस तरह बच्चों के विविध मानसिकता को लेखक यहाँ मज़े के साथ व्यक्त करती है।

प्रस्तुत उपन्यास में बजरंग महराज का होटल है जिसके पीछे एक बौना पहाड़ है। इसकी विशेषता यह है कि हम उसमें पत्थर डालने से सात दिन बाद ही खन्न की आवाज़ आती है । यहाँ एक हरी घास की छप्पर वाली झोंपड़ी है उसकी छप्पर बरसों से सूखती नहीं है। यह आश्चर्य की बात है। लेखक कहते है कि " हरी घास की छप्पर वाली झोंपड़ी की छप्पर बरसों से हरी भरी थी । कभी सूखती नहीं थी । भरी गरमी में भी नहीं । घास बहुत ऊँची हो गई थी । जब ज़ोर की हवा चलती तो छप्पर की घास झकती और आसपास की झोंपड़ी को ढाँप लेती । गरमी में जब सूर्य उत्तरायण होता तो सूर्य छप्पर की हरी घास से निकलता । " (6)

' यासि रासा त ' उपन्यास में एक साधारण परिवार की कथा है और इसमें छोटी – छोटी छब्बीस कहानियाँ संकलित हैं। यह मुख्यतः तीन बहनों की कहानी है। यहाँ कथा यासि रासा के रोज़मर्रा के कार्यवाही से शुरू होता है। इसमें यासि बड़ी थी छः वर्ष और रासा छोटा चार वर्ष की है। दोनों के स्वभाव एक दूसरे से विपरीत है। पढ़ने में दोनों होशियार थी । यासि बहुत शाँत स्वभाव की थी और रासा शरारती है। रोज़ जगाने के बाद दोनों को एक आदत थी कि माँ से पूछती है- माँ मुझे क्या करना है या माँ मैं क्या करूँ। यह सुनकर निया को कभी क्रोध भी आती है। यासि - रासा के पिता वेन्द्र काफी समय अपनी नौकरी से संबंध दौरे में रहता है। प्रस्तुत उपन्यास में प्रकृति के प्रति प्रेम और लगाव भी देख सकते हैं। उपन्यास में एक पात्र है गणेशी प्रसाद। वह चलते हुए यदि थक जाते तो रास्ते में ही स्थिर सुस्ताने के लिए खड़ा हो जाता है और दोनों हाथ फैलाकर ही खड़े हैं। इसका कारण यह है कि किसी पक्षी उठते समय थक जाते तो आराम करने के लिए ही वह अपने दोनों हाथ फैलाकर रास्ते में स्थिर खड़ा हो जाता है। आज के समाज में मानवता नष्ट होते जा रहे हैं लेकिन इसी समय यहाँ गणेशी प्रसाद चिड़ियों के लिए रक्षक बन जाता है। चिड़ियों के सुस्ताने के लिए वह अपने हाथों को फैलाकर उन्हें बैठने के लिए जगह देता है।

बच्चों के दुनिया के बारे में कहते वक्त लेखक प्रकृति को यहाँ एक सहचारी के रूप में व्यक्त करते हैं। बच्चू नामक एक लड़का है वह सब्जी बेचने के लिए गाँव में आते हैं। त एवं बच्चू के बीच मित्रता है। एक दिन त बच्चू के ढोले में बैठकर यासि - रासा के घर जाना चाहता है। बच्चू एक दिन लौकी को ठेले में लाद कर गाँव पहुँचाता है । वह लौकी साधारण - सी नहीं है। वह एक बढ़नेवाली लौकी है। त इस बढ़ने वाली लौकी पर सवार कर अपनी बुआ के घर पहुँचती है। यह जादू भरी बात है तभी लौकी बढ़ती है । इस तरह अनेक घटनाएँ है जिसे पाठेकों की कुतूहलता बढ़ाने का कारण बन जाता है।

' एक चुप्पी जगह ' उपन्यास भी शुक्ल जी बच्चों केलिए लिखा गया है। वहाँ बच्चे एवं उनके अनोखी बातें हैं। उस बच्चों की दुनिया में टहनी पेंसिल है वह केवल बाबुलाल महराज ही छील सकते हैं , काला बादल है , जंगल में एक सयाना बाबा है, लंबे डगवाला लड़का है, कभी नहीं हँसने वाली एक लड़की सुनचुक्की है, पत्थर का काँवरा उठानेवाले एक बाबा है, रस्सी बनाने वाला बूढा है , बादल पक्षी है, ऐसा एक जगह है वहाँ एक पार आवाज़ हो तो दूसरी पार सन्नाटा है । जैसे इस उपन्यास बच्चों के एक अलग संसार में पाठकों को खींचकर ले जाते हैं।

विनोद कुमार शुक्ल ' नौकर की कमीज ', ' खिलेगा तो देखेंगे एवं ' दीवार में एक खिड़की रहती थी ' इन तीनों उपन्यासों में आम आदमी के रोज़मर्रा के जीवन अनुभवों , उनकी परेशानियाँ, आकांक्षाएँ, जीवन के प्रति आस्थावादी दृष्टिकोण आदि का सहज एवं सादगीपूर्ण वर्णन किया है। " नौकर की कमीज ' से आरंभ होकर ' खिलेगा तो देखेंगे ' से होती हुई ' दीवार में एक खिड़की रहती थी ' तक की उनकी उपन्यास यात्रा में प्रत्येक कृति की निजी विशेषता के बावजूद एक विलक्षण एकसूत्रता है और कई बार ऐसा लगता है कि एक कृति में जो बात कहने से रह गई है उसका दूसरा कृति में नए सिरे से और नए रूप – विन्यास के साथ पुर्नकथन हुआ है । " (7)

'हरी घास की छप्पर वाली झोंपड़ी और बौना पहाड़ ' यासि रासा त ' एवं ' एक चुप्पी जगह शुक्ल जी बच्चों केलिए लिखा गया उपन्यास हैं । आपके इन उपन्यासों में बच्चों की स्वप्नीली दुनिया, उनकी जिज्ञासा, संदेह, मित्रता, प्रकृति से आत्मीयता जैसे भावों की अभिव्यक्ति है । वह अपने शब्दों के ज़रिए एक जादुई संसार रचते हैं। बाल मन बड़ों से बहुत भिन्न है। उनके विचार एवं चिंतन भी यथार्थ से परे कल्पना की ओर ही ज़्यादा है। यहाँ शुक्ल जी प्रकृति का चित्रण बच्चों के एक सहचारी के रूप में ही किया है। विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यासों में वर्णित कल्पना जगत में वास्तविक संसार ऐसा है जो जीवंतता और रचनात्मकता से भरा है।

****

संदर्भ ग्रंथ:-

1.विनोद कुमार शुक्ल - ' नौकर की कमीज़ ' – आधार प्रकाशन ,2019 – पृ. 15
2.वही पृ ,206
3.विनोद कुमार शुकल , ' खिलेगा तो देखेंगे ' , आधार प्रकाशन – 2019, पृ.9
4. वही, पृ. 177
5.विनोद कुमार शुक्ल ,हरी घास की छप्पर वाली झोंपड़ी और बौना पहाड़ ' – राजकमल प्रकाशन - 2018 , बुक फ्लैप से ।
6.वही, पृ. 20
7.प्रेम भरद्वाज (सं) , अनहोना शिल्प अनहोनी कथाएँ (विनोद कुमार शुक्ल : समग्र मूल्यांकन , अनन्य प्रकाशन , नई दिल्ली, पहला संस्करण – 2016, पृ .90